International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(6): 79-82

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(6): 79-82
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-09-2021
Accepted: 15-10-2021

डॉ. देवराज
सहायक आचार्य, संस्कृत,
इक्डोल हि. प्र. वि. वि.,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

रविदत्त शर्मा
शोधार्थी, संस्कृत विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. देवराज
सहायक आचार्य, संस्कृत,
इक्डोल हि. प्र. वि. वि.,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

श्री शालग्रामचरितम् में शकुनशास्त्रोल्लेख

डॉ. देवराज, रविदत्त शर्मा

प्रस्तावना

मानवजीवनदर्शन का यदि यथार्थ मूल्याङ्कन किया जाये, तो सारत: यही समझ में आता है कि मानव जीवन एक अनबूझ पहेली सदृश है, एवं मनुष्य का हृदय तो अभिलाषाओं तथा विचारों का क्रीडास्थल और कामनाओं एवं जिजीविषाओं का सतत आवास प्रतीत होता है । संसार, इन्हीं इच्छाओं और आशाओं के पल्लवन एवं परिवर्धन का दूसरा नाम है, जिसने इन्हें नैराश्यनद में प्रवाहित कर दिया है । उसे सांसारिक जन तो नहीं समझा जा सकता है क्योंकि मनुष्य की अनन्त जिजीविषाओं का सतत प्रज्ज्वल ही उसे अमृत रस सदृश आनन्दातिरेक से आप्लावित किये रहता है । शकुन तो मानव के गवेषणात्मक विचार ही कहे जा सकते हैं, जो मानव मस्तिष्क से अपनी गहरी जड़े जमाए हुए हैं । महाभारत,[१] याज्ञवल्क्यस्मृति[२] अग्निपुराण[३] तथा महाकवि कालिदास[४] माघ[५] एवं श्रीहर्ष के ग्रथों में इनका वर्णन मिलने के साथ आज भी इनकी प्रासङ्गिकता विद्यमान होने से इनकी समीचीनता की पुष्टि होती है ।

हिमाचल प्रदेश के सुप्रसिद्ध लेखक प्रो० केशवराम शर्मा ने भी अपने ग्रन्थ 'श्री शालग्रामचरितम्' में भी शकुन शास्त्र का वर्णन किया है । शकुन से अभिप्राय ऐसे शुभाशुभ विचारों से हैं, जो हमें किसी भी कार्य के पूर्व में शुभाशुभ घटना का सङ्केत देते हैं ।

शकुन शब्द की निष्पत्ति

विद्वानों ने शकुन शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि "शक्नोति शुभाशुभविज्ञातुमनेनेति शकुनम्" ६ शकुन शब्द की निष्पत्ति शक्+उनन् दो शब्दों के योग से होती है । शकुन वे शुभ या अशुभ सूचक चिन्ह या संकेत हैं, जो किसी कार्य के सम्बन्ध में शुभ या अशुभ सूचना देते हैं । इस प्रकार स्पष्ट है कि शकुन शास्त्र उसे कहा जाता है जिसमें शकुन सम्बन्धी विचारों के विश्लेषण दिए गये हो।

अग्निपुराण में छ: प्रकार के शकुनों का वर्णन किया गया है । यथा

तिष्ठतो गमने प्रश्ने पुरुषस्य शुभाशुभम् ।
निवेदयन्ति शकुना देशस्य नगरस्य च ।।
सर्व: पापफलो दीप्तो निर्दिष्टो दैवचिंतकै: ।
शान्त: शुभफलेश्चैव देवज्ञै: समुदाहृत: ।।
षटप्रकारा विनिर्दिष्टा शकुनानाम् च दीप्तय: ।

बेलादिग्देशकररुतजाति विभेदत: ।।
पूर्वा पूर्वा च विज्ञेया सा तेषां बलवत्तरा: ।
दिवाचरो रात्रिचरस्तथा रात्रौ दिवाचर: ।।
क्रुरेषु दीप्ता विज्ञेया ऋक्षलग्नग्रहादिषु ।
धूमिता सा तु विज्ञेया यां गमिष्यति भास्करः ।।

नैषधीयचरित में शकुन का वर्णन इंद्र द्वारा दमयन्ती वरण हेतु नल को अपना दूत बनाने के सन्दर्भ में किया गया है कि हे नल ! भरत (दुष्यंत पुत्र), अर्जुन और वैन्य (राजा पृथु) के समान तुम्हारा नाम स्मरण देशान्तर जाने वाले को अभीष्ट फल देता है, यदि तुम अपने जाने की निष्फलता में शङ्का करते हो, तो सब शकुन आदि मङ्गल निष्फल है[७] यहाँ इंद्र के कथन का तात्पर्य यह था कि यात्रा करते समय भरत आदि के समान तुम्हारे नाम का स्मरण करने से यात्रा करने वाले व्यक्ति का मनोरथ पूर्ण हो जाता है, अत: मङ्गल स्वरूप यदि तुम्हारी ही यात्रा निष्फल हो जाएगी तब तो अन्य लोगों के लिए उक्त मङ्गलवचन भी निष्फल हो जायेगा,अत: तुम्हें हम लोगों के दूत कर्म करने में निष्फल होने की शङ्का कभी नहीं करनी चाहिए क्योंकि कहा भी गया है-

वैन्यं पृथुं हैहयमर्जुनं च शकुंतलेयं भरत नलं ।
एतान्नृपान्य: स्मरति प्रयाणे तस्यार्थसिद्धि: पुनरागमश्च ।।[८]

अर्थात् जो मनुष्य प्रस्थान के समय भरत, अर्जुन, पृथु, एवं नल का स्मरण करता है, उसकी कार्य सिद्धि भी होती एवं सकुशल घर भी वापस लौटता है।
श्री शालग्रामग्रामचरितम् में भी शकुन का उल्लेख शालग्राम के संकृतमहाविद्यालय सोलन में प्रधानाचार्य के पद पर आसीन होने के सन्दर्भ में किया गया है कि जब श्रीशालग्राम संस्कृतमहाविद्यालय सोलन में अध्यापनार्थ पहुचे तो धर्म की उन्नति चाहने वाले,सज्जन तथा श्रद्धालु, वहाँ के लोगों ने उनका आगमन साक्षात शूलिनी देवी (सोलन की अधिष्ठात्री देवी) का आशीर्वाद स्वीकार किया और सभी लोगों ने उनका फिर से सोलन लौट कर आना शुभ शगुन होने का सङ्केत माना ।

धर्मोन्निनीषव: संत: श्रद्धावन्तो जनस्तथा ।
तममन्यत सम्प्राप्तं शूलिन्या आशीषं यथा ।।[९]

स्वप्नादि दर्शन का शुभाशुभ शकुन

शकुनविद् स्वप्नादि दर्शन के माध्यम से भी शुभाशुभ शकुन से फलसिद्धि की व्याख्या सम्पन्न करते हैं । श्रीहर्ष का कथन हैं कि स्वप्न, पहले नहीं देखे गए पदार्थ को भी पूर्वजन्म की भावना से मनुष्य को दिखला देता है । दमयन्ती भी नल को स्वप्न में पति रूप में देखती थी एवं बाद में नल दमयन्ती को पति रूप में प्राप्त भी हुए।[१०] स्वप्नविदों का मन्तव्य है कि रात्रि के चतुर्थ चरण में देखे गये स्वप्न शीघ्र फल देते हैं।
नैषधीयचरित के व्याख्याकार नारायण ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा है कि "गोविसर्जनवेलायां दृष्टवा सद्यः फलं लभेत् "[११] एवं मल्लिनाथ कहते हैं कि "स्वप्नदृष्टस्यार्थस्य जागरे सत्यसंवादादाश्चर्यम्" ।[१२] नल ने भी निशावसान वेला में मधुर अधरों वाली अपनी प्रिया दमयन्ती के संयोग का अनुभव किया था एवं सद्यः दूसरे ही दिन उसका दमयन्ती से मिलन भी हो गया था । यथा:-

सम्भुज्यमानाद्य मया निशान्ते स्वप्नेऽनुभूता मधुराधरेयं ।
असीमलावण्यरदच्छदेत्थं कथं मयैव प्रतिपद्यते वा।।[१३]

अत: स्पष्ट है कि स्वप्नों से भी शकुनों का विचार मनुष्यों द्वारा किया जाता है । नैषधकार ने शकुन रूप में मङ्गल-कलश देखना, दर्पण देखना, लाजा गिराना, फल एवं फूलों को देखना भी शकुन के अन्तर्गत स्वीकार किया है, जिसका वर्णन उन्होंने नल की वरयात्रा प्रसङ्ग में समुपस्थापित किया है ।[१४] साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि जब नल वर रूप में राजा भीम के महल कि ओर चले, तो उन्होंने शुभ सूचक दधि, अक्षतपूर्ण कलश आदि मांगलिक वस्तुओं का अभिनन्दन किया था ।[१५]
शुभ शकुन वर्णन के इस प्रसंग में श्री 'शालग्रामचरितम्' में भी शालग्राम के तपस्या में लीन होने पर दैवीय शक्ति के प्रकोप का शुभ शकुन वर्णित किया गया है कि एक बार शालग्राम माला को हाथों में लेकर जाप कर रहे थे, वे जाप करते-करते इतने ध्यानमग्न हो गये कि माला के स्पर्श से हाथों में आग लग गई और हाथ की चमड़ी जलने लग गई उनका करीब आधा हाथ जल गया था परन्तु ध्यानावस्था के कारण उन्हें कोई आभास नहीं हुआ। इस महाकष्ट के आने से पहले एक अद्भुत चमत्कार हुआ अकस्मात् एक बन्दर आकर दरवाज़ा खोल देता है जिसकी तीव्र ध्वनि से शालग्राम की ध्यान एकाग्रता भग्न हो जाती है। इस प्रकार एक महान् कष्ट से उनकी रक्षा हो जाती ।[१६] इस दैवीय चमत्कार को तत्कालीन कुछ लोगों ने देवी कृपा माना, कुछ लोगों द्वारा हनुमान का आशीर्वाद अङ्गीकृत किया गया तथा कुछ लोगों ने इसे दीर्घ तपस्या का कारण स्वीकृत किया ।[१७]

अपशकुनों का उल्लेख

शुभ सूचक विवरण के साथ-साथ संस्कृत- साहित्य में अपशकुनों का उल्लेख भी मिलता है। मङ्गल कार्य में आँखों से आँसू गिरने पर अमङ्गल समझा जाता है । दौत्यकर्म में प्रवृत्त नल के द्वारा सतत देवताओं को वरण करने की नल की प्रार्थना पर दमयन्ती करुणा से रुदन

कर रही थी । नल दमयन्ती की उस अवस्था पर द्रवीभूत होकर बोले- दमयन्ती ! आँखों से निरन्तर प्रवाहित होने वाले इस अमङ्गल अश्रुजल को सर्वप्रथम मैं अपने हाथों से पोंछ देता हूँ क्योंकि यह अमङ्गलकारी है ।[१८] यात्रा के समय में छींक आने पर भी अपशकुन माना जाता है। नैषधीयचरितम् में वर्णन किया गया है कि दमयन्ती का समाचार पाकर जब देवगण अपने भाग लेने के लिए चले तो उनकी पत्नियों ने छींक दिया था जिसे अपशकुन माना गया था ।[१९]

हिमाचल प्रदेश के सुप्रसिद्ध लेखक प्रो० केशवराम शर्मा ने भी श्री शालग्रामचरितम् महाकाव्य में अपशकुनों का उल्लेख किया है जिसमें साँप का घर के अन्दर जाना अपशकुन माना गया है । एक बार शालग्राम के पिता घर में गहरी निद्रा में सो रहे थे उसी समय अचानक एक साँप घर के अन्दर प्रवेश कर गया । पिता कृपाराम के शान्त अवस्था में एवं निश्चल मुद्रा में सोये होने होने पर वह साँप अन्दर आया और उनके शरीर को बिना डसे

भाग्य से दूसरी ओर चला गया । साँप के भार से नींद टूटने पर जब उन्होंने इस भयंकर साँप को देखा तो वह स्तब्ध हो गये ।[२०]

इस भयङ्कर घटना को सुनकर लोग हैरान होकर सर्पदंश से बचाव को देवी-देवताओं की शक्ति व कृपा समझकर भगवान् का और देवी-देवताओं का धन्यवाद करने लगे।[२१] यद्यपि उस सर्प ने कृपाराम को कोई हानि नहीं पहुँचाई परन्तु इस वृत्तान्त को उनके बन्धु-बान्धवों द्वारा अरिष्ट एवं अपशकुन माना गया, जिससे वे सब उस घटना के पश्चात् चिन्तित से रहने लगे ।[२२]

शुभाशुभ का विचार करने वाले कृपाराम का भी इस घटना के पश्चात् भावी सङ्कट की कल्पना से उदास रहने का उल्लेख लेखक ने किया है । साँप का घर के अन्दर प्रवेश करने को वह अपशकुन मानकर चिंता में व्याकुल हो गए । इसके पश्चात् एक छोटा सा विकार शरीर में उत्पन्न हुआ और अमङ्गल की शङ्का के कारण वह अत्यन्त तीव्र हो गया, जिस कारण उनका निधन हो गया।[२३] इस प्रकार इस घटना से यह प्रतीत होता है कि उस समय लोग घर में साँप का आना किसी अमङ्गल घटना का प्रतीक मानते थे, जो तत्कालीन सभी लोगों के द्वारा कृपाराम की मृत्यु का कारण माना गया ।

इसके अतिरिक्त श्री 'शालग्रामचरितम्' महाकाव्य में लेखक ने आजीविका के सन्दर्भ में तत्कालीन लोगों का शुभाशुभ शकुन वर्णित किया है । तत्कालीन लोगों कि आजीविका के विषय में मान्यता रहती थी कि खेती से प्राप्त आजीविका उत्तम कोटि की होती है और व्यापार करके मध्यम कोटि एवं सरकारी सेवा द्वारा प्राप्त आजीविका सबसे न्यून कोटि की मानी जाती है।[२४]

उपसंहार

इस प्रकार संस्कृत-साहित्य में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक विभिन्न ग्रन्थों में शकुनशास्त्र सम्बन्धी उल्लेख लेखकों द्वारा किया गया है जिसका शुभाशुभ विचार पहले भी कुछ लोगों द्वारा किया जाता था तथा आज भी लोग इस प्रकार की बातों को कहीं ना कहीं जीवन में अनुभव किया करते हैं । स्वप्न आदि शुभाशुभ शकुन के सन्दर्भ में यदि रात्रि के चतुर्थ पहर यानी सुबह के समय में कोई स्वप्न हमें दिखाई देता है तो उसे यथार्थ माना जाता है । दमयन्ती राजा नल को स्वप्न में पति रूप में देखती थी और उसे नल का वास्तव में पति रूप में मिलना शुभ शकुन सिद्ध हुआ । इसी प्रकार शालग्राम की रक्षा उस बन्दर के रूप में शुभ शकुन सिद्ध हुई यदि वह बन्दर दरवाज़ा ना खोलता तो शालग्राम का पूरा शरीर जलकर राख हो जाता और कुछ अनिष्ट हो जाता।

इस प्रकार शकुनों के साथ अपशकुनों का वर्णन भी किया गया है । शुभ कार्य में आँखों से अश्रुपात अमङ्गलकारी माना गया है । इसलिए अगर सम्भव हो सके तो हमें कभी भी माङ्गलिक कार्यों में रोना नहीं चाहिए । यात्रा के समय में छींक का आना भी अपशकुन माना गया है । यहाँ भी अपशकुन का वर्णन करते हुए यही उल्लेख किया गया है कि अगर किसी के भी घर में साँप चला जाए तो वह भी अपशकुन का प्रतीक माना जाता है जैसे-कृपाराम के घर में साँप का जाना अमङ्गल सिद्ध हुआ उसके पश्चात् उसकी मृत्यु हो गयी ।

अत: अगर इन बातों को हम ध्यान में लाते हैं, तो आज भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन में ऐसी अनेक घटनाएँ घटित होती रहती हैं, जो भावी जीवन में होने वाली शुभ और अशुभ घटनाओं को पहले ही सङ्केतित करती हैं और हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. केनेदृशी जातु पराहि दृष्टा वागुच्यमाना शकुनेन संस्कृता । महाभारत, ३. १९६.११
2. शकुनोच्छिष्टम् । याज्ञवल्क्यस्मृति, १.१६८
3. अग्निपुराण । २३०.३२
4. रघुवंश । २.१०
5. अशकुनेने स्खलित: किलेतरोऽपि । शिशुपालवध, ९.८३
6. अग्निपुराण, २३१,१-५
7. प्रवसते भरतार्जुनवैन्यवत्स्मृतिधृतोऽपि नल ! त्वमभीष्टद: ।
   स्वगमनाफलतां यदि शंकसे तदफलं निखिलं खलु मंगलम् ।। नैषधीयचरितम्, ५.१३४
8. वही, ४.१३४
9. श्री शालग्रामचरितम्। ८.५६

10. मनोरथेन स्वपीकृतं नलं निशि क्रसा न स्वपती स्म पश्यति ।
अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम्।।
निमीलितादक्षियुगाच्च निद्रया हृदोऽपि बाह्येन्द्रियमौनमुद्रितात् ।
अदर्शि संगोप्य कदाप्यवीक्षितो रहस्यमस्या: स महन्महीपति: ।। नैषधीयचरितम्, १.३९-४०
11. वही, ७.४२ नारायण मत
12. वही, ७.४२ मल्लिनाथ टिप्पणी
13. वही ।
14. अजानती कापि विलोकनोत्सुका समीरधूर्तामपि स्त्रांशुकम् ।
कुचेन तस्मै चलतेऽकरोत्पुरः कुरांगना मंगलकुम्भसंभृतम् ।। नैषधीयचरितम्,१५.७४
15. वृत: प्रतस्थे स रथैरथो रथी गृहान्विदर्भाधिपतेधराधिप:।
पुरोधसं गौतममात्मवित्तं द्विधा पुरस्कृत्य गृहीतमंगल:।। वही,१६.१
16. द्वारं पिहितमुद्घाट्य कपि कोऽपि जवात् गतः ।
तत्तीव्रध्वनिना ध्यानं व्ययुज्यत विपश्चितः ।।
श्री शालग्रामचरितम्,८.८७
17. केचिद् देवीकृपां केचिदाशीर्वादं हनुमत: ।
तपसो वा फलं केचिद रक्षाहेतूनचिन्तयन् ।। वही,८.९१
18. दृशोरमंगल्यमिदं मिलज्जलं करेण तावत् परिमार्जयामि ते ।
अथापराधं भवदंघ्रिपंकजद्वयीरजोभि: सममात्ममौलिना ।। नैषधीयचरितम्, ९.१०६
19. समं सपत्नी भवदु:खतीक्षणैः स्वदारनासापथिकैर्मरुद्भि: ।
अनंगशौर्यानलतापदु:स्थैरथ प्रतस्थे हरितां मरुद्भिः ।। वही,८.८६
20. भूमौ पितरि संसुप्ते गाढ़निद्रा वशं गते ।
समायातो महासर्प: कुतश्चिद् भीषणाकृति: ।
प्रशान्त निश्चलं सुप्तमुल्लंघ्य स पितुर्वपु:
कालकल्पो महाव्यालो दिष्ट्याऽदष्ट्वाऽन्यतो गत: ।।
श्री शालग्रामचरितम्,३.९-१०
21. आकर्ण्य घटना घोरां लोका विस्मयमाप्नुवन् ।
देवशक्ति: कृपां मत्वा धन्यवादानथाब्रुवन् ।।
श्री शालग्रामचरितम्,३.१३
22. ज्ञात्वाऽरिष्टापशकुनं स च सर्वे च बांधवा: ।
अभूवन् हि तदारभ्यानर्थ शंकित मानसा: ।।
विप्रोऽप्यमंगलोत्पातं मन्वानोऽनर्थ सूचकम् ।
प्रत्यग्रसंकटोत्प्रेक्षी विमनस्क इवाभवत् ।। वही,३.१६
23. लाघोरपि विकारात् स शंकया तीव्रतां गतात् ।
नेवाशक्नोत समुधर्तुं स्वात्मानं कर्दमादिव ।।
आधार: परिवारस्य धर्म्स्यात्मा कुलस्य च ।
शिशोः प्राणप्रतीकाश: कृपारामो दिवं गत: ।। वही,३.१९-२०
24. उत्तम: कृषिनिर्वाहो वाणिज्यं खलु मध्यमम् ।
सेवावृत्तिर्जघन्येति तदा लोकैरमन्यत् ।।
श्री शालग्रामचरितम्, ३.२
25. अग्निपुराण : श्रीमन्महर्षिकृष्णद्वैपायनव्यासविरचितम्, गुरुमंडलग्रन्थ मालाया: सप्तदशपुष्पम्, प्रकाशक : मनुसुखरायमोर ५, क्लाइव रोड कलकत्ता, संस्करण : १९५७
26. नैषधीयचरितम् : लेखक : श्रीहर्ष, संपादक : डॉ० श्यामलेश कुमार तिवारी, प्रकाशक : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण : २०१७
27. महाभारत: लेखक : वेदव्यास, अनुवादक : पंडितरामनारायण शास्त्री, पाण्डेय राम, प्रकाशक : गीताप्रेस गोरखपुर (गोविन्द भवन कार्यालय, कोलकाता का संस्थान) तेहरवां संस्करण : २०६७ वि० सं०
28. याज्ञवल्क्यस्मृति : विज्ञानेश्वर प्रणीत मिताक्षरा सहित, संपादक : डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय प्रकाशक : काशी संस्कृत सीरिज़ वाराणसी, संस्करण : १९६९
29. रघुवंशमहाकाव्यम् : लेखक : महाकवि कालिदास, व्याख्याकार : पंडित श्रीब्रह्मशंकरमिश्र, साहित्यशास्त्री, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी
30. शिशुपालवधमहाकाव्यम् : लेखक : माघकवि, प्रकाशक : चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, संस्करण : २०२९ संवत्
31. श्री शालग्रामचरितम् : लेखक : प्रो० केशवराम शर्मा, प्रकाशक : मान्यता प्रकाशन ६०-सी, मायाकुंज, मायापुरी,नयी दिल्ली-११००६४ (भारत) प्रथम संस्करण : २०१४